डॉ. पाटील पद्मा,
एम्.ए.एम्.फिल., पीएच्.डी.
प्रोफेसर एवं अध्यक्षा,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416004.

संस्तुति

मैं संस्तुति करती हूँ कि ''अज्ञेय के उपन्यासों में मनोवैज्ञानिकता'' इस लघुशोध प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

स्थल : कोल्हापुर।

दिनांक : 20 / 11 /2009

डॉ. पाटील पद्मा
प्रोफेसर एवं अध्यक्षा,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४.

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

डॉ. सौ. देशपांडे सुलोचना
एम्.ए., एम्.एड., एम्.फिल.,पीएच्.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्षा, हिंदी विभाग,
कर्मवीर हिरे आर्टस्, कॉमर्स, सायन्स
ॲन्ड एज्युकेशन कॉलेज, गारगोटी,
जि. कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

प्रमाणपत्र

मैं डॉ. सुलोचना देशपांडे, प्रपाठक तथा अध्यक्षा, हिंदी विभाग, कर्मवीर हिरे आर्टस्, कॉमर्स, सायन्स ॲन्ड एज्युकेशन कॉलेज, गारगोटी, जि. कोल्हापुर, यह प्रमाणित करती हूँ कि, श्री बाजीराव राजाराम शेलार ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध प्रबंध – ''अज्ञेय के उपन्यासों में मनोवैज्ञानिकता'' मेरे निर्देशन में बडे परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। जो तथ्य प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही है। श्री. शेलार के शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

स्थल : कोल्हापुर।

दिनांक : 20 / 11 /2009

(डॉ. सौ. देशपांडे सुलोचना श्रीहरी)
शोध-निर्देशिका

प्रख्यापन

''अज्ञेय के उपन्यासों में मनोवैज्ञानिकता''

यह शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल.(हिंदी) के प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थल : कोल्हापुर।

दिनांक : 20 / 11 /2009

(श्री. वाजीराव राजाराम शेलार)
शोध छात्रा के हस्ताक्षर

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

प्राक्कथन

मानव एक चिंतनशील प्राणी है। समय-समय पर परिस्थिति के अनुरूप विचारों में परिवर्तन आता रहा है। इसलिए उसके चिंतन को एक नया मोड़ मिलता रहा है। चिंतन की धारा भी आज व्यक्ति जीवन के बाह्य पत को छोड़कर आंतरिकता की खोज में प्रवाहित होने लगी है। चिंतक आज व्यक्ति अंतर्मन में उठनेवाले भावों के विविध पक्षें को जानने और खोलने का प्रयत्न करने लगा है, जिससे उपन्यास साहित्य में मनोविज्ञान का प्रभाव बढ़ा है।

मैं, महाविद्यालय में अध्यापन का काम करता हूँ। अध्यापन का काम करते समय उपन्यास पढ़ने का मौका मिलता है। महाविद्यालय में पढ़ाते वक्त मैंने अध्यापन हेतु अज्ञेयजी लिखित अपने-अपने अजनबी, शेखर : एक जीवनी तथा नदी के द्वीप यह उपन्यास पढ़े थे। अज्ञेयजी लिखित इन उपन्यासों ने मानव के मन की पर्तो को एक-एक करके खोलने का कार्य किया है। ये मानव के मन की खोज करते हैं और उसकी सूक्ष्मताओं का चित्रण विविध चरित्रों में हम स्वयं अपने आप को कहीं निकट महसूस करते हैं। हमारे मन में उठनेवाले अनेक भावों के संघर्षों को हम इन उपन्यासों में देख सकते हैं।

तो मैंने सोचा कि मैं ''अज्ञेय के उपन्यासों में मनोवैज्ञानिकता'' का अध्ययन एम.फिल. के लघु शोध-प्रबंध के लिए क्यों न करूँ?

सौभाग्यवश श्रद्धेय गुरूवर्या डॉ. सुलोचना देशपांडेजी से मैंने अपनी इच्छा का जिक्र किया और उन्होंने इस विषय पर शोध कार्य करने की मुझे अनुमती दी। अज्ञेय के तीनों उपन्यास मनोवैज्ञानिक ही हैं।

प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य निम्नलिखित है -

1) मानव के मन की खोज करना।
2) मानव मन की आंतरिक भावनाओं पर प्रकाश डालना।
3) हमारे मन में उठनेवाले अनेक भावों के संघर्षों को प्रस्तुत करना।

4) स्त्री चरित्रों के साथ-साथ पुरुष चरित्रों को भी गहराई से नापना।

इन सभी उद्‌देश्यों की पूर्ति करने का प्रयास मैंने निम्नलिखित चार अध्यायों में किया है।

प्रथम अध्याय :-

'अज्ञेय का व्यक्तित्व तथा कृतित्व' इस अध्याय में अज्ञेयजी का विस्तार से जीवन परिचय दिया है। अज्ञेयजी के कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

द्‌वितीय अध्याय :-

'अज्ञेय के उपन्यासों का परिचयात्मक अध्ययन' इस अध्याय में मैंने अज्ञेय द्‌वारा लिखित तीनों उपन्यास 'शेखर एक जीवनी', 'नदी के द्‌वीप', 'अपने-अपने अजनबी' की कथावस्तु संक्षिप्त में स्पष्ट करते हुए कथावस्तु का उपन्यास के तत्वों के अनुसार अनुशीलन किया है। अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

तृतीय अध्याय :-

'मनोवैज्ञानिकता : स्वरूप विवेचन' इस अध्याय में मैंने उपन्यास और मनोवैज्ञानिकता के संबंध को स्पष्ट करते हुए उपन्यास और मनोविज्ञान पर प्रकाश डाला है। मनोविज्ञानिकता अर्थबोध और उसकी विभिन्न परिभाषाओं पर प्रकाश डाला है। मनोवैज्ञानिकता के अर्थविस्तार को भी लक्षित किया है। मनोवैज्ञानिकता के दो प्रमुख प्रकार : सामान्य मनोवैज्ञानिकता और असामान्य मनोवैज्ञानिकता को विश्लेषित किया है।

चतुर्थ अध्याय :-

'अज्ञेय के उपन्यासों में मनोवैज्ञानिकता' इस अध्याय में मैंने 'अपने अपने अजनबी', 'शेखर: एक जीवनी', 'नदी के द्‌वीप' इन तीनों उपन्यासों के मनोवैज्ञानिकता पर प्रकाश डालने

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

के लिए, तीनों उपन्यासों के प्रमुख स्त्री पात्र तथा प्रमुख पुरुष पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत किया है। प्रत्येक पात्र के अंतर्द्वंद्व को मनोवैज्ञानिक ढंग से स्पष्ट किया है। जीवन का विकास मनोविकारों पर आधारित है और मनोविकार का आधार मनोविज्ञान है। व्यक्तित्व के चरित्र गठन में उनका स्वभाव और परिवेश जो तनाव निर्माण करते जा रहे हैं इसको विवेचित किया है। अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधारपर प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं।

अंत में उपसंहार के अंतर्गत इस लघु शोध प्रबंध का सार रूप दिया है। उसमें पूर्व विवेचित अध्यायों के प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष दिए हैं । तत्पश्चात अंत में संदर्भ ग्रंथ-सूची दी हैं।

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

ऋण-निर्देश

मेरी आदरणीय गुरुवर्या एवं निर्देशिका डॉ. सुलोचना देशपांडे, अध्यक्षा, हिंदी विभाग, कर्मवीर हिरे आर्टस्, कॉमर्स, सायन्स ॲन्ड एज्युकेशन कॉलेज, गारगोटी का मैं नितांत आभारी हूँ। प्रा. डॉ. पद्मा पाटील, अध्यक्षा, हिंदी विभाग, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापुर का मैं नितांत आभारी हूँ। उनके सहयोग के बिना यह शोध-कार्य संभव नहीं था। प्राचार्य गुलाबराव आंब्राळे, गिरिस्थान कला व वाणिज्य महाविद्यालय महाबलेश्वर, का भी मैं ऋणी हूँ। प्रा. सुधाकर शिंदे, अध्यक्ष हिंदी विभाग, गिरिस्थान कॉलेज महाबलेश्वर, जिन्होंने अपने कॉलेज में मुझे स्थान दिया, उनका भी मैं नितांत अभारी हूँ। प्रा. संतोष आखाडे, प्रा. सचिन ओहोळ, प्रा. शंकर जाधव, प्रा. कोळीजी के ऋण तो मैं जीवन भर नहीं भूल सकता।

मेरी परम पूज्य माताजी श्रीमती अनुसूया शेलार का ऋण चुकाना इस जन्म में तो संभव नहीं आज उन्हें अपने पुत्र को इस ऊँचाई तक पहुँचने पर जो सुख मिलेगा, उसकी कल्पना मैं नहीं कर सकता। सर्वश्री नंदकुमार शेडगे, विशाल रामचंद्रन, विनायक तिखे मौसम कार्यालय में ऊँचे पद पर विराजमान हैं, उन्हें आज अपने दोस्त पर नाज होगा। उनसे मुझे स्नेह एवं प्रेरणा मिलती रही।

मुझे मेरी बहनों का भी अपार प्यार मिला। उनमें हैं श्रीमती हिराबाई धनावडे, जिसने मुझे माँ का प्यार दिया और मेरे व्यक्तित्व को निखारा।

ग्रंथों एवं पत्र-पत्रिकाओं को चुन-चुनकर देना और मेरा उत्साह बढ़ाने का कार्य गिरिस्थान कॉलेज महाबलेश्वर की ग्रंथपाल सौ. ढगे जी ने किया है। इस लघु-शोध प्रबंध का टंकलेखन सातारा के श्री. अनंत केजकर, अथर्व कॉम्प्युटर, सातारा जी ने बड़ी तत्परता से एवं उत्तम ढंग से पूरा किया अत: मैं उनके प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ।

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

इस सारे कार्य के पीछे बहुत बड़ी प्रेरणा मेरे आदर्श श्री. राजीव अरोरा और संजीव अरोराजी है। इनके अतिरिक्त भी कितने ही अनाम लोग हैं, जिनकी शुभेच्छा मेरे कार्य के पीछे रही है। उन सबका मैं आभारी हूँ और रहूँगा।

स्थल : कोल्हापुर।

दिनांक : 20/ 11 /2009

Shelar

- श्री. बाजीराव राजाराम शेलार
शोध छात्र